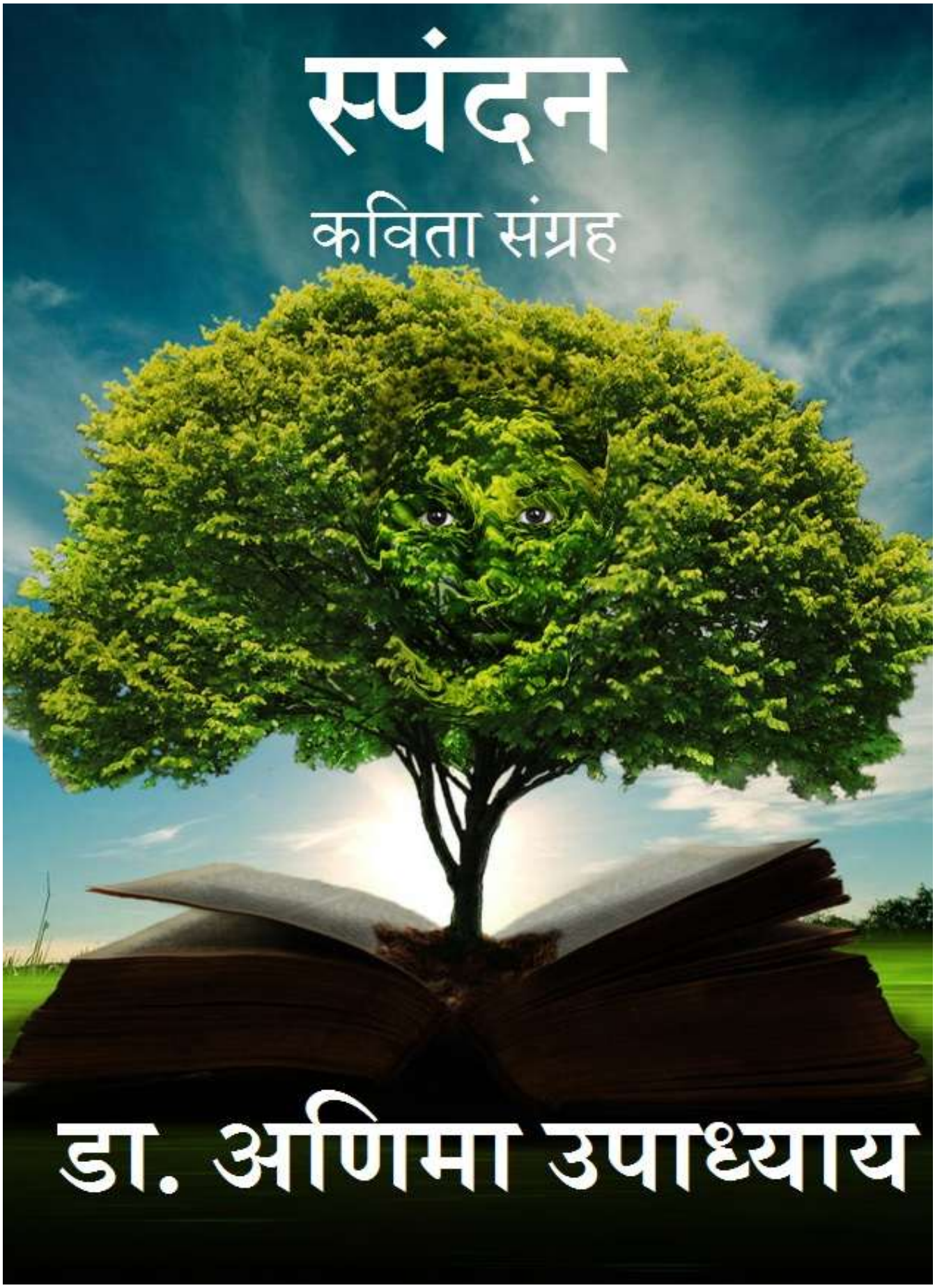

स्पंदन
कविता संग्रह
डा. अणिमा उपाध्याय

अनुक्रमणिका

दो शब्द	3
मां	4
खामोशियां	6
चाहिए	8
प्रकृति निर्मोही है	10
मन्थन	12
प्रतीक्षा	14
हम मसीहा हो गये	16
तुम उसे आगाज़ देना	17
देखो हम मजबूर हो गये	19
रास्ते	21
क्रांतिवीर	23
हर्फ़ नगमों में सजाकर गुनगुनाने दीजिये	25
उन धड़कते दिलों को संगदिल बनाया जा रहा है	27
पछतावा	29
बचपन	32
मंज़र	34
अहसास	36
खुद सलीब अपना लाये	38
परछाइयां	40
आत्मबोध	42
प्रकृति	46
अहसास	48
वह ईश्वर कहलाता है	50
यादें	52
चेहरे	55
मजबूरी	58
वो गीत की पंक्ति में सजते	60
आँखें	63

लेखक - डा. अणिमा उपाध्याय

C- कापीराइट – डा. अणिमा उपाध्याय

प्रकाशक – आलोक शुक्ला प्रकाशन

सर्वाधिकार सुरक्षित

दो शब्द

इस काव्य-संग्रह को मैं अपनी माँ स्वर्गीय डा शशि शुक्ला के चरणों में समर्पित करती हूँ. वह मेरी मार्गदर्शक, गुरु एवं आलोचक थीं. वही मेरी प्रेरणा थीं और वही मेरी सबसे प्रिय श्रोता भी थीं. माँ जैसी उम्दा कवियत्री एवं साहित्यकार के सम्मुख यह रचनाएँ अत्यंत त्रुटिपूर्ण एवं बचकानी सी ही प्रतीत होंगी. परन्तु मेरा सदैव यह प्रयास रहेगा कि मैं अपनी रचनाओं में परिपक्वता एवं गंभीरता बढ़ा सकूँ. पाठकों से मेरा निवेदन है कि वे अपने विचार मुझ तक ज़रूर पहुंचावें ताकि जहाँ पर भी मेरे लेखन में सुधार कि आवश्यकता हो मैं यथा संभव वहां उनमें सुधार कर सकूँ.

मेरा यह संकलन कई भावों की एक माला है. हर कविता का रंग अलग है. आशा-निराशा, सत्य भाषण, दुःख, प्रसन्नता,योग - वियोग, जीवन के इन सभी भावों को माला के मनकों की तरह पिरोने की भरसक कोशिश इस पुस्तक में की गयी है. पाठकों को एकरसता से बचाने की यह पहल उन्हें अवश्य ही भली प्रतीत होगी, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ऐसे ही मिश्रित दिन व क्षण होते हैं . इन्हीं मिली-जुली भावनाओं को मूल मंत्र मानकर मैंने अपनी कविताओं को इस पुस्तक रूपी माला में पिरोया है. आशा है पाठकों को ये पुस्तक अवश्य ही रुचिकर लगेगी .....

डा . अणिमा उपाध्याय

मां

तुतली भोली सी बातों से, जो अपना दिल बहलाती है,

नन्हे –नन्हे से पैरों को, जो पग रखना सिखलाती है ,

जो बिना कहे ही बातों को, आँखों से ही पढ़ जाती है,

वो ही ममता की मूरत है, वो ही तो मां कहलाती है.

जिसे अपना पराया कोई नहीं, बच्चों से प्यारा कोई नहीं,

जिसे जात-पांत का भेद नहीं, काले गोर का खेद नहीं,

जो श्याम-सलोनी मूरत में, खुद बेसुध सी हो जाती है,

वो ही ममता की मूरत है, वो ही तो मां कहलाती है.

जिसे अपनी भूख से पहले ही , बच्चों की भूंख सताती है,

जो अपनी क्षुधा भुला कर भी ,बच्चों की भूंख मिटाती है,

जो बस किलकारी सुनने को मासूमों में रम जाती है,

वो ही ममता की मूरत है, वो ही तो मां कहलाती है.

जिसकी बाँहों में आकर हम, सब अपना दर्द भूलते हैं,

सीने से लगते ही जिसके, सब ज़ख्म दूर हो जाते हैं,

जिसकी थपकी लोरी बनकर , धीरे-धीरे सहलाती है,

वो ही ममता की मूरत है, वो ही तो मां कहलाती है.

मेरी मां की याद मैं उनके चरणों में समर्पित ....

oooo

खामोशियां

खामोशियां है, फिर भी यह बोलती हैं,

चुप रह कर भी, हजारों राज़ खोलतीं हैं.

यूँ तो बातों में, सैकडों अर्थ निहित होते हैं,

मगर एक चुप, हज़ार बातों पे भारी होते हैं.

यह नज़रें ही तो हैं, जो इंसानों को तोलती हैं,

खामोशियां चुप रहकर भी, बहुत कुछ बोलती हैं.

कहते हैं, एक चुप्पी हजारों बला टालती है,

हलकी सी मुस्कान भी, क्या कुछ कह डालती है.

ज़रा सी टेढ़ी हुई , तो कटारी सी छीलती है,

माथे की हर शिकन, अन्दर तक बींधती है.

चढ़ी हुई त्यौरियाँ, कितना कितना कुछ कह जाती हैं,

झुकी हुई पलकें भी, धीरे से बतियाती हैं.

कहाँ अभिव्यक्ति को, शब्दों की, दरकार होती है,

शब्द तो लिखने वालों की, कलम की धार होती है.

कभी एकांत में, जब खुद से बातें होती हैं,

तब हमारी ख़ामोशी से, आँखें चार होती हैं.

कितना सुकून, कितना आराम, वो देती हैं,

साँसें अभी बाकी हैं , यह खामोशियां बता देती हैं.

०००००

चाहिए

अजब सी इस व्यस्तता की ज़िन्दगी में,

हंसने का तो कुछ बहाना चाहिए.

अपनों से अब कहाँ मिलता है कहीं दिल,

उसको कहीं और लगाना चाहिए .

शोर है गलियों में देखो इस कदर अब,

चल के वीरानों में बसना चाहिए.

कमर दुहरी हो गयी, थक गए हैं हम,

झुके कन्धों को सहारा चाहिए.

दूर तक दिखता नहीं, कोई ठिकाना,

अब ठिकाना बदल लेना चाहिए.

रास्तों और मंजिलों की होड़ है यह,

कुछ लम्हे फुर्सत के जीना चाहिए.

स्याह रात के अँधेरे पसर जाएँ,

उसके पहले हमको रुखसत चाहिए.

०००००

प्रकृति निर्मोही है

उम्र के चौथे चरण में,

हुआ यह अहसास है,

देते थे अब तक सहारा,

अब सहारा चाहिए.

साँसों की गिनती भी अब तो,

कर रहे सब लोग हैं,

बूढ़े होते इन दरख्तों,

को हवा तो चाहिए.

नित् पुराने साथियों को,

कह रहे हैं अलविदा,

वक़्त थोडा और मालिक,

मुझको फिर भी चाहिए.

प्रकृति निर्मोही है,

देती है उतना वक़्त ही,

जितना उसकी नयी फसल के,

हित में होना चाहिए.

०००००

मन्थन

निभाने से रिश्ते कहाँ निभते हैं,

बनाने से दोस्त कहाँ बनते हैं.

बड़ा अजीब सा दस्तूर है दुनिया का,

फिर भी, लोग आपस में मिलते हैं.

हर बार , बाद मिलने के, मन खिन्न होता है.

अपनी कमियों का अहसास, और तीव्र होता है,

हर बात के सौ -सौ मानी निकलते हैं,

फिर भी, लोग आपस में मिलते हैं.

किसी की परेशानी देख दिल भर आता है,

फिर भी अंतर्मन को सुकून मिल जाता है,

जले पे अपनों के, नमक छिड़क हँसते हैं,

फिर भी, लोग आपस में मिलते हैं.

हर बार कहते हैं शक्ल नहीं देखेंगे,

सामना हुआ भी तो मुंह फेर लेंगे,

लेकिन, फिर- फिर मिलने की बाट जोहते हैं,

फिर भी, लोग आपस में मिलते हैं.

०००००

प्रतीक्षा

ठिठुरी हुई कातर नज़रें,

आसमान में सूरज को ढूंढ रही हैं,

इस उम्मीद में....

कि वह निकलेगा,

और काट डालेगा, इस घने बर्फीले कोहरे की चादर को.

पर सूरज ने तो "कोहरे" से

सुलह कर ली है,

वह आज भी नहीं आया !!!

दिन ढलने को है

और शाम तेज़ी से पैर पसार रही है....

कोहरा मदमस्त हंस रहा है

जा ओढ़ ले, अपनी फटी चादर,

और सिमट जा एक कोने में,

रात की बादशाहत,

आज, फिर मेरी है .....

क्या शेष बची साँसे

ठिठुरन सह पाएंगीं !!

भोर की लालिमा

क्या यह आँखें देख पाएंगीं ?

या वह यूँ ही मुंद जाएँगी ?

मौत फिर एक बार, ज़िन्दगी पर,

पड़ रही भारी है,

अँधेरे की कालिमा,

ज़िन्दगी को धीरे-धीरे, निगलती जा रही है.

oooooo

हम मसीहा हो गये

अजनबी सी भीड़ में, जाने कहाँ गुम हो गये.

देखने आये तमाशा, खुद तमाशा बन गये.

खामखाँ ही लोग हम पे, फब्तियां कसने लगे.

उनको होना था परीशां, हम परीशां हो गये.

इस कदर कुछ सादगी का, भूत था, हम पे सवार,

बेवजह ही सादगी के हम मसीहा हो गये.

रात भर पीते रहे गम, आंसुओं में घोलकर,

सुबह अश्कों ने भी छोड़ा, हाय तनहा हो गये.

क्या करें फितरत हमारी ऐसा जागा है ज़मीर,

फूंक के घर फिर रहे हैं, हम फकीरा हो गये.

०००००

तुम उसे आगाज़ देना

कोई अफ़साना बनाकर, तुम मुझे आवाज़ देना.

रूह को रूह से मिलाकर , तुम मुझे आवाज़ देना.

मैं कभी जब डूब जाऊं, गम के सागर में गले तक,

मुझको बाहों में उठाकर, हो सके तो थाम लेना.

घुट रहा है दम अगर जो, दब गयी आवाज़ भी तो,

मुझको मुझसे जो मिला दे, तुम मुझे वो साज़ देना.

मैं नहीं मुझमें रही अब, तुझमें जाकर बस गयी हूँ,

साँसों के अंतिम लम्हों तक, छोड़ना ना साथ देना.

कोई जो उंगली उठाये, रिश्तों की गुहार गाये,

मुझपे होते हर ज़ुलम का, ढाल बन ज़वाब देना.

मीत थे अब ज़िंदगी हो, युगों से साथी तुम्हीं हो,

फ़ासले सारे मिटाकर, तुम मुझे आवाज़ देना.

नए युग की पैरवी कर, नए युग का साथ देना,

छोड़ कर लम्हे पुराने, तुम उसे आगाज़ देना.

oooooo

देखो हम मजबूर हो गये

कुछ देखे कुछ अनदेखे,

वो सपने चकनाचूर हो गये.

पतझड़ के पत्तों के जैसे,

अपनों से हम दूर हो गये.

निकले थे ले ठोस इरादे,

पर मज़िल से दूर हो गये.

आंधी के एक ही झोंके से,

तितर – बितर हो धूल हो गये.

खड़े अकेले हैं रस्ते पे,

साथी सब काफूर हो गये.

जिन फूलों को चुनने निकले,

वो सारे तो शूल हो गये.

हालाहल, जबरन पीने को,

देखो हम मजबूर हो गये.

ooooo

रास्ते

सीधे टेढ़े – मेढ़े रास्ते,

कंकरीले – पथरीले रास्ते.

कहाँ ख़तम होते यह रास्ते,

कहाँ शुरू होते यह रास्ते.

बस चलते रहते हैं रास्ते,

हाँ जगते रहते हैं रास्ते.

धूल भरे कच्चे ये रास्ते,

फूलों से महंकें वो रास्ते,

संकरी पगडंडी से रास्ते,

चौड़े सागर जैसे रास्ते.

घास भरे मैदानों से जो,

चोटी तक ले जाते रास्ते.

बिना थके 'जो' चलते रहते,

मंजिल तक पहुंचाते रास्ते.

दूर –दूर ले जातें हैं पर,

वापस भी, लौटाते रास्ते.

वीर और जोगी सबको ही,

सही दिशा ले जाते रास्ते.

ooooo

क्रांतिवीर

ऐ मन तू आज फिर,

जाने क्यों अधीर है ?

क्या किसी अबला का कोई,

खींच रहा चीर है !

आज फिर तू साक्षी है,

देवव्रत सा तू वहीं है,

द्रौपदी की वेदना का,

तू ही चशमदीद है.

बंधनों की बेड़ियों से,

जकड़ा हुआ पीढ़ियों से,

घूंट पीता क्यों ज़हर का,

कैसा क्रांतिवीर है ?

आज उठ चीत्कार कर तू,

मृत्त क्यों सोया पड़ा तू ?

छलनी छलनी हो रहा दिल

कराहता है पीर से.

उठ अभी प्रतिकार कर तू,

आँधियों सा वार कर तू,

रौशनी के जला दीये,

अंधेरों को चीर दे.

ooooo

हर्फ़ नगमों में सजाकर गुनगुनाने दीजिये

रंजिशों को भूलकर भी, यूँ हवा ना दीजिये,
इक यही एहसान मुझ पर , थोडा सा कर दीजिये.

मैं नहीं काबिल हूँ , तेरी दोस्ती का इल्म है,
पर मुझे इक बार अपना हक़ निभाने दीजिये.

ठोकरों से बचा लाऊं, तुझे अपनी बाहों में,
इस निगहबानी का मुझको भी तो मौका दीजिये.

तेरे क़दमों पे लगी उस धूल का भी है नसीब,
मुझको अपने रास्तों की धूल बनने दीजिए.

यह नहीं कि आपको, मुझपे नहीं ऐतबार है,

चुपके-चुपके ही सही कुछ तो इशारा कीजिये.

तेरी रुसवाई हो जग में यह नहीं मंज़ूर है,

दफ़न कर दूँ दर्द, सीने में ही रहने दीजिये.

अब कभी अल्फाज़ होठों पे, मेरे ना आयेंगे,

हर्फ़ नगमों में सजाकर गुनगुनाने दीजिये.

कोशिशें नाकाम तुझको भूल जाऊं, कीं मगर,

बुझ गयी है आग चिंगारी तो रहने दीजिये.

०००००

उन धड़कते दिलों को संगदिल बनाया जा रहा है

आदमी संग आदमी, देखो लड़ाया जा रहा है,

हसरतों को धूल में, कैसा मिलाया जा रहा है.

लग रही है यहाँ बोली , आज हर शहीद की,

उनकी मैयत पे चढ़े, फूलों को बेंचा जा रहा है.

धड़कते थे दिल कभी जो भारत माँ के नाम पे,

उन धड़कते दिलों को संगदिल बनाया जा रहा है.

क्या यही है संस्कृति भारत की आन- बान की,

नफ़रतों का बीज देखो कैसा बोया जा रहा है.

राजनीति और धरम के, हो रहे विवाद में,

लहुलुहान देश को, देखो भुलाया जा रहा है.

कोई तो आगे बढ़ो औ रोक लो इस कहर को,

अजब सी इन बेड़ियों में देश जकड़ा जा रहा है.

ooooo

पछतावा

समझो अब मौसम के इशारे,

पंछी सब गर्मी से हारे,

फागुन की बौछारों में भी,

फ़ीके रंग रह गये सारे.

नहीं कूकती कोयल कोई,

सूनी सी अमराई सोई,

बंजर धरती कह –कह हारी,

कब महकेगी बगिया प्यारी.

हरे पेड़ सब कटते जाएं,

कहाँ बसेरा पंछी पायें,

किस शाखा पर बैठ घोंसला,

तिनका –तिनका जोड़ बनायें.

सूरज आग उगलता जाये,

कहाँ कोई भी छाया पाये,

नदिया, ताल-तल्लैया सूखी,

लाचारी अब सही न जाये.

निर्मम बादल मुंह चिढ़ाते,

नहीं बरसते बस इठलाते,

उम्मीदों से तकती अंखियों,

को वो आकर हैं तरसाते.

ऐ मानव ये क्या कर डाला,

आज जुबां पे पड़ा है ताला,

तेरी इस करनी से देखो,

भुगत रहा है ये जग सारा.

क्या कहता इतिहास रचेगा,

नया सौर मंडल ढूंढेगा,

तज देगा धरती माता को,

जीने के मौके खोजेगा.

क्या हर प्राणी साथ जायेगा,

किस-किस को तू भूल पायेगा,

एक मिडास पहले पछताया,

एक मिडास फिर पछतायेगा.

oooooo

बचपन

मेरे बचपन की तस्वीरें,

धुंधली- धुंधली चंद लकीरें,

टूटा- फूटा उखड़ा आंगन,

बची खुची वो कुछ प्राचीरें ...

कभी जहाँ बगिया होती थी,

कभी जहाँ झूले पड़ते थे,

किलकारी और मनुहारों के,

रोज़ नए मेले होते थे ...

दीवारें ढह गयीं समय में,

अब सब कुछ वीरान हो गया,

हँसता- इठलाता घर देखो,

कैसा कब्रिस्तान हो गया ...

बचपन के भोलेपन में जो,

बो दी थीं कंचे की गोली,

दबी पड़ीं थीं गुमसुम सी वो,

मेरे अरमानों की झोली ...

उस मिट्टी में बसी हुई हैं,

महकी- महकी प्यारी यादें,

बंद आँखों से देखो उनको,

खुली आंख तो सब बिसरा दें ...

आंगन के कोने में अब भी,

एक मोगरा फूल रहा है,

आगे बढ़ो इशारा समझो,

मंद हवा में झूल रहा है ...

ooooo

मंजर

हर तरफ़ अफरा- तफ़री है,

चीत्कार की यह नगरी है,

दर्द और क्रंदन में डूबी,

सर्द रात हाय गुज़री है ....

विधि ने कैसा चक्र रचा यह,

क्यों ऐसी यह मौत मिल रही,

एक बार में जाना था दम,

टूटी सांसें क्यों चल रहीं ???

दूर- दूर तक फैले शव पर,

गिध्द दावतें उड़ा रहे हैं,

दबे हुए नर- अंगों पर भी,

कुत्ते ऑखें गड़ा रहे हैं ...

मेरी नन्ही- मुन्नी गुड़िया,

शायद कहीं सिसकती होगी?

या माँ के आलिंगन में ही,

चिर- निद्रा में सोती होगी !!

नहीं बचा जीने का साहस,

नहीं देखने की है शक्ति,

पल भर में ही समझ आ गया,

क्या है तुच्छ मानव की हस्ती ...

हँसता- मुस्काता सा जीवन,

कैसा अब वीरान हो गया,

नहीं खिलेगी कोई कली अब,

जीवन रेगिस्तान हो गया.

ooooo

अहसास

आज मद्धम सी हवा है,

धूप है कुछ गुनगुनी,

मैं वो धड़कन सुन रही हूँ,

जो हैं शायद अनसुनी ...

दूर से आती आवाजें,

देखो अब धीमी हुईं,

भीड़ में हूँ , पर अकेली,

खुद के अन्दर गुम हुई ...

पैर रस्ता चल रहे हैं,

मन तो कहीं और है,

मेरी इस उथल –पुथल का,

नहीं कोई ठौर है ...

दिल और दिमाग दोनों,

नहीं मेरे वश में है,

एक की सुनती हूँ तो,

दूजे से कशमकश में है ...

उम्र की ढलान पे,

यह ज़िंदगी है सोंचती,

लेखा जोखा किस्मतों का,

आंसुओं को पोंछती ...

है नहीं साहस बचा कुछ,

लड़खड़ाते पैर हैं,

साँझ चौखट पे खड़ी है,

ना किसी से बैर है...

ooooo

खुद सलीब अपना लाये

हालाहल भी तो हाला है,

जो शिव ने है पी डाला,

फिर हाला पीने वाले पर,

क्यों पाबंदी क्यों ताला.

कोई भक्ति की, ज्योत जगाकर,

नारायण – स्मरण करे,

कोई शक्ति की राह चल पड़े,

और सबका वह दमन करे.

क्या है पाप और पुण्य क्या,

कैसे अंतर कर पाऊं,

मैं अबोध मैं तो अज्ञानी,

गूढ़ अर्थ कैसे पाऊं.

एक ओर हैं रिश्ते नाते,

दूजी ओर सारा संसार,

छोड़ू इनको विधि को पाऊं,

क्या कर दूँ यह, अत्याचार ?

सूली चढ़ने बाद ही ईसा,

जग को यह समझा पाए,

जिस दिन पैदा हुए हम सभी,

खुद सलीब अपना लाये.

०००००

परछाईयाँ

वो आये भी कुछ इस तरह,

जैसे अभी मिले,

वो लम्हे इंतजार के,

कहाँ हैं कम हुए.

आँखों में घूमती हैं,

परछाइयां तेरी,

दिल और दिमाग में बसी,

वो गुफ्तगू तेरी.

नज़रें घुमा के देख लूँ,

तो पाऊँगी कहाँ,

तुझको समेट बाहों में,

रख पाऊँगी कहाँ.

तू ही है मेरा आईना,

तू अक्स है मेरा.

तू ही मेरी रुबाई है,

तू लक्ष्य है मेरा.

खुद को तुझी में घोलकर,

हो जाऊँगी फ़ना,

बस जाऊँगी तस्वीर मैं,

ढूँढोगे फिर कहा.

०००००

आत्मबोध

सुबह शाम में ढलती है,

और शाम सुबह हो जाती है,

जीवन की अनसुलझी गुत्थी,

बिन सुलझे रह जाती है.

नहीं मिले गर मंजिल तो फिर,

रस्ता खत्म नहीं होता,

बाहर के उजियारे से तो,

भाग्य उदित नहीं होता.

कितना आसां है ये कहना,

पैर नहीं पसारो तुम,

जितनी चादर उतना फैलो,

दिल की कही ना मानो तुम.

रोती- सोती दुनिया से तुम,

क्या हासिल कर पाओगे,

अपनापन भी दे ना पाये,

किससे उम्मीद लगाओगे ??

भूली बातें याद दिलाओ,

यह तो महज़ बहाना है,

जो सचमुच अपने होते हैं,

उन्हें कहाँ बिसराना है.

मिलने की अभिलाषा तेरी,

अगर क्षीण हो जाएगी,

डोरी फिर कच्चे धागे की,

प्रीत -विहीन हो जाएगी.

इक दिन तो ऐसा जीवन में,

हर इक के ही आता है,

छोड़ के नश्वर मृत शरीर,

वो जीव कहीं उड़ जाता है.

ooooo

प्रकृति

प्रकृति तू है बड़ी अभिमानी,

किसी को दे दिए कंकड़,

किसी को दे दिया पानी,

कहीं पर धूप तपती है,

कहीं बारिश नहीं होती,

कहीं तबाही लता है,

तमाम बाढ़ का पानी .....

किसी के पास हरियाली,

कहीं पे रेत भर डाली,

कहीं नदिया का ये पानी,

उफनता है मचलता है,

कहीं तालाब और पोखर,

बूंद भर जल को भी ,तरसता है,

कहेगा कौन तुझसे क्या,

यहां है तेरी मनमानी .....

कहीं पर्वत के पीछे से,

सूरज अभिसार करता है,

कहीं सागर हिलोरें ले,

बड़ी हुंकार भरता है,

समझता उसकी थाह का,

नहीं, पैदा हुआ सानी .....

यह तूने खेल- खेल में,

हज़ारों चित्र रच डाले,

रंगों और तरंगों के,

विचित्र जीव रच डाले,

कोई हिम पे बसेरा कर,

पवन को मात देता है,

तो कोई जलचर होकर भी,

धरा का साथ देता है,

निभाता है यहाँ भरसक,

अपना पात्र हर प्राणी .....

ooooo

अहसास

सुब कुछ पीछे छोड़ पथिक को,

आगे बढ़ते जाना है.

माया- मोह सभी बंधन हैं,

इनसे साथ छुड़ाना है.

अपना क्या और बेगाना क्या,

रिश्ते भी सब छोड़े साथ.

मिट्टी में ही पले बढ़े और,

मिट्टी में मिल जाना है.

बड़े – बड़े गुणी ग्यानी सब,

समझाएं यह गूढ़ रहस्य,

फिर क्यों भरे तिजोरी अपनी,

फिर क्यों भरे खज़ाना है.

साधारण मानव भी जाने,

नहीं निभाता कोई साथ,

क्षण – भंगुर है जीवन सबका,

सब –कुछ आना जाना है.

०००००

वह ईश्वर कहलाता है

मीठी नदिया का पानी जब,

सागर से मिल जाता है.

खो देता है मीठापन वह,

वो खरा हो जाता है ....

हिम की चोटी से निकला फिर,

चाहे गंगा जल ही हो,

बिसराकर वो अपनी महिमा,

सागरमय हो जाता है ....

कितनी- कितनी दूरी तय कर,

लोग अग्रसर होते हैं,

खो जाते हैं भव-सागर में,

अंत वहीं पर सोते हैं ...

ऊँच-नींच का भेद भुला जो,

मानवता अपनाता है,

पहुंचाता जो औरों को सुख,

वह ईश्वर कहलाता है ...

ooooo

यादें

चने का खेत,

इमली के पत्ते,

अपनी मनमानी,

और पगडंडी रस्ते ...

आम की अमराई,

कोयल की कुहुक,

दादा की चारपाई,

दादी की रजाई ...

आंगन में चौपड़,

और बाबूजी का थप्पड़,

अम्मा का चूल्हा,

और दीदी का झूला ...

चाची की सहेली,

करें खेल अठखेली,

आंगन में कुआँ,

गलियों में धुआं ...

कमरे का छप्पर,

और रिसता पलस्तर,

अब नहीं दिखते वो,

आंगन चौबारे ...

अब नहीं होती वो,

फागुन की मस्ती,

अब नहीं पड़ते हैं,

सावन में झूले ...

सब कहाँ खो गये,

गली चौरस्ते,

टाट के पेबंद लगे,

इस्कूली बसते ...

अब कहाँ लगते हैं,

सर्कस और मेले,

खो गये खलिहान,

जहाँ हम खेले ...

गुम हुआ बचपन,

औ छूटे सब मेले,

पीछे सब छोड़ आये,

रह गये अकेले ....

०००००

चेहरे

बड़े ही अजीब होते है चेहरे,

कभी डराते हैं चेहरे,

कभी हंसाते हैं चेहरे,

कभी मजबूर लगते हैं चेहरे,

कभी मजबूर करते हैं चेहरे,

चेहरे के ऊपर लगे चेहरे,

चेहरे के नीचे के चेहरे ...

कभी कुछ बोलते हैं चेहरे,

बंद राज़ खोलते हैं चेहरे,

किताबों में बंद चेहरे,

सुराखों से झांकते चेहरे,

कभी बदरंग लगते यह चेहरे,

कभी बदरंग करते यह चेहरे ...

खींसे निपोरते यह चेहरे,

रोते बिसूरते से चेहरे,

सांवले सलोने से चेहरे,

प्यारे मन मोह लें वो चेहरे,

बड़े नूरानी से चेहरे,

बड़े रुहानी हैं चेहरे ....

कैसे बदल जाते हैं चेहरे,

फिर भी याद आते हैं चेहरे,

मुरझाये चोट खाए से चेहरे,

चापलूसी चिपकाये हुए चेहरे,

बदस्तूर बदलते यह चेहरे,

हाय तरसते यह चेहरे,

वाह यह चेहरे , क्या खूब चेहरे ....

०००००

मजबूरी

ज़िन्दगी और मौत दोनों ही, सस्ती हैं,

आदमी की यहाँ पर, नहीं कोई हस्ती है.

ताकतवर लोग यहाँ, रोज़ मौज करते हैं,

जिनके इशारों पे, कौर हमे मिलते हैं.

लोग जो इनके, आगे गिडगिडाते हैं,

उनको यह अपनी, उँगलियों पे नचाते हैं.

रोज़ किसी घर से कुछ, सिसकियाँ उभरती हैं,

जिनसे कुछ दिन थोड़ी, सुर्खियाँ सी बनती हैं.

फिर लम्बा अन्तराल, औ ख़ामोशी छाती है,

अफसर शाही नेताओं के पीछे, दुम हिलाती है.

चंद लोग कहीं कुछ, हिम्मत जुटाते हैं,

कहने कुछ आते हैं, कह के कुछ जाते हैं.

गर कुछ लोग जो, सत्य पे अड़ जाते हैं,

उन्हें हम सलीब पे, लटका हुआ पाते हैं.

ooooo

वो गीत की पंक्ति में सजते

आंसू बनके गीत कितने,
ढोल की थापों पे बजते,
कोई गुमनामी के हिस्से,
कोई हैं साहित्य रचते.

वीर रस की दास्तानें,
हैं इन्हीं गीतों में बसती,
झाँसी रानी या शिवाजी,
हीर राँझा सबकी हस्ती.

सुरों तालों में सजे यह,
महफ़िलों में हैं महकते,
ओस की बूंदों के जैसे,
हौले –हौले से बरसते.

ना जाने कितने तराने,

दिल के कागज़ पे लिखे हों,

जो कभी गाये न जाएँ,

वो अधूरे ही रहें हों.

साहिल जिसको मिल गया,

वो सभी, इठलाके - फिरते,

जाने कितने ही तराने,

सुर में बंधने को तरसते.

हर सुबह इक नयी कहानी,

गीत बन बर्बाद होगी,

पैरों की थिरकन बनेगी,

घुंघरू की झंकार होगी.

फूल बनती हर कली को,

जीने का अधिकार दे दो,

ऐसा गीत रच सकें वो,

उनको थोड़ा प्यार दे दो.

सभी किस्से- दास्तानें,

सहमे-सहमे से फ़साने,

ख्वाहिशें और आरज़ू की,

लम्बी -ऊँची यह उड़ाने.

जो रहे आधे -अधूरे,

आँखों के कोनों से रिसते,

शब्द जिनको मिल गये,

वो गीत की पंक्ति में सजते.

ooooo

आँखें

बहुत कुछ बोलती हैं,

रहस्य खोलती हैं,

कभी हौले से बुलाती हैं,

तो कभी परे हटाती हैं,

कभी चिलमन उठाती हैं,

कभी चिलमन गिरती हैं,

यह कभी घूरती हैं,

कभी बिसूरती हैं,

कभी लजाती हैं,

तो कभी डरती हैं,

कभी गुस्से से लाल,

कभी मदहोश बेहाल,

कभी हंसती हुई,

कभी रोती हुई,

कभी लजाई शरमाई हुई,

कभी ममता से नहाई हुई,

कभी करें तीखे वार,

कभी फाड़ खाने को तैय्यार,

क्या कुछ व्यक्त नहीं करतीं है,

यह कजरारी आँखें,

हाय बड़ी अनमोल और बेजोड़ हैं,

यह कजरारी आँखें.

०००००